रामपन

RAMNESS

पार्ट–4

प्रस्तुतकर्ता :–

रामराज्य आहवाहन मिशन

Website : www.ramrajyaahwahan.com
E-mail : ram@ramrajyaahwahan.com

प्रमुख कार्यालय :
ए 1, बी 2, पुष्पा अपार्टमेन्ट–III, 44ए, राजेन्द्र नगर,
सैक्टर 5, साहिबाबाद जिला गाजियाबाद (यू0पी0)
फोन नं0 0120–6516399, 09313055063

! ठहरो !

धरती पर, दोबारा से **रामराज्य** जैसी खुशियां लाने मे हमारा सहयोग करे।

रामराज्य आह्वाहन मिशन

वैबसाईट देखें :
www.ramrajyaahwahan.com

नोट : *आप भी राम हो सकते हैं, आप कहीं न कहीं के राजा हैं, आप किसी न किसी बात के धनी हैं, आप अपने परिवार या अपने व्यापार के राजा ही तो हैं, भगवान ने हर एक को बनाया हैं। अपना राज्य तथा अपना धन पहचानें और अपने राज्य को रामराज्य जैसा बनाकर, इस दुनिया में रामराज्य लाने में हमारा सहयोग करें।*

मिशन को जानने के लिए सम्पर्क करें।

**A1 & B2, पुष्पा अपार्टमैंट–III, 44A, राजेन्द्र नगर,
सैक्टर 5, साहिबाबाद, जिला गाजियाबाद
फोन नं0 : 0120–6516399, 9313055063
E-mail : ram@ramrajyaahwahan.com**

मिशन सोचता है कि परिवार एक राज्य ही तो है, व्यापार एक राज्य ही तो है इसका मुखिया एक राजा ही तो है। हर राजा अपने राज्य को ऐसे क्यों नहीं चलाता जैसे राम जी अपना राज्य चलाया करते थे जब आप ऐसा चाहने लगेंगे, तो आप राम जी की तरह राज्य करना सीख भी जाऐंगे ही एवं जब आप राम जी की तरह राज्य करना सीख जाऐंगे तो रामराज्य ही करेंगे और क्या करेंगे। आपको भी आनन्द आ जाएगा आपके परिवार को भी आनन्द आजाएगा और फिर धीरे-धीरे रामराज्य ही होगा आप शुरू करें तथा अपने राज्य में रामराज्य बनाऐं।

आज भी एवं आगे भविष्य में भी जिससे सबका जीवन तर सके।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

1. प्रवचन तो सभी देते है सभी अच्छा अच्छा कहते हैं मगर जों हंसा हंसाकर प्रवचन सुनाता है जगत को खीचंता है।

2. खाना तो सभी खिलाते हैं मगर प्यार से खिलाना खुश हो होकर अर्थात हंसा हंसा कर खिलाना उसमें अच्छापन होता है तारीफे काबिल होता है।

3.कर्मयज्ञ फल हमें यज्ञ का बचा हुआ खाना चाहिए अगर बचा हुआ खाया जाता है तो वह अमृत होता है अन्यथा वह विष हो जाता है अगर यज्ञ में कम डाला जाता है अपने लिए बचाने का प्रयत्न किया जाता है तो विष हो जाता है हमें बचा हुआ खाना चाहिए।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

भक्ति – भगवान की सेवा

भक्त – भगवान का सेवक कर्मचारी

भगवान की सेवा :– ज्यादातर भगवान की पूजा को भक्ति माना जाता है लोग इसे ही भक्ति मान लेते हैं मगर यह तो भक्ति का सिर्फ एक अंश है।

भक्ति क्या है :– मेरा मानना है कि जब हम भगवान की भगवान के काम में मदद करते हैं तो वह भक्ति कहलाती है। तथा जब हम भक्ति करते हुए इस बात का ध्यान रखते हैं कि हमारे द्वारा की गयी सेवा ऐसी हो

कि भगवान का नाम रोशन हो भगवान का मान बढ़े तो यह सच्ची भक्ति कहलाती है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

दुनिया में जो भी हो रहा है कहा जाता है कि सब भगवान ही कर रहे हैं अब जो भगवान कर रहे हैं भक्त का फर्ज है उसे मान दिलाए अपने बल के अनुसार क्योंकि रामायण में लिखा है अपने से बलशाली से नहीं भिड़ना चाहिए यह खुदखुशी के समान है जो पाप है और भक्त को किसी भी स्थिति में पापी नहीं बनना है न कहलाना है वरना भगवान का नाम बदनाम होगा। यहां पर अपने को दब्बू न समझें अच्छा समझे एवं अगर आवश्यक लग रहा है तो पहले अपना बल बढायें अपने को बलशाली बनायें।

जैसे–जैसे भगवान तुम्हारे साधन विवेक बल बढ़ाते रहते हैं वैसे – वैसे तुम्हें अपना सेवा क्षेत्र बढाते रहना होता है क्योंकि कि भगवान तुम्हारे पास साधन तथा बल तभी बढाते हैं जब उन्हें लगता है कि तुम उसका सही उपयोग कर पाओगे। मगर अक्सर ऐसा हो जाता है जब भगवान तुम्हारे पास साधन तथा बल बढा देते हैं तो भक्त स्वयं को ही भगवान समझने लग जाता है तथा भूल जाता है कि वह तो सिर्फ भक्त है तथा कई ऐसे काम भी कर लेता है जिससे भगवान का नाम बदनाम होता है, क्योंकि भक्त के हर किया कलाप से भगवान का नाम जुड़ा होता है। यह बिल्कुल ऐसे ही है जैसे कि एक कर्मचारी को जब हम तरक्की दे देते हैं उसके अधिकार बढा देते हैं तो वह अपने अधिकारों का

दुरुपयोग शुरु कर देता है तथा संगठन के मालिक के लिए ऐसे कर्मचारी को संगठन से निकालना भी मुश्किल हो जाता है और नुकसान पर नुकसान होते रहते हैं फिर मालिक किसी दूसरे कर्मचारी की तलाश में रहता है तथा जैसे ही मिल जाता है तो मालिक इन्तजाम कर देता है तथा फिर संगठन में खुशिया आनी शुरु हो जाती हैं।

बस ठीक ऐसे ही यह भगवान की दुनिया है। जो मात्र ऐसे ही बिगड़ गयी है काश हम अपने साधनों का अपने बल का बस ऐसा प्रयोग करते जैसा भगवान चाहते हैं तो हमारे भगवान को अपनी दुनिया को देख देखकर दुखीः न होना पड़ता भगवान का नाम बदनाम न होता क्योंकि जब किसी गरीब अर्थात किसी गरीब केवल पैसे का ही गरीब नहीं जिस पर जो योग्यता नहीं है वह उसमें गरीब ही तो है इस योग्यता के गरीबों पर अमीर अत्याचार करता है, अपना रोब मारता है तो भगवान का दिल रोता है सोचता है कि मैंने तो इन्हें अमीर इस लिए बनाया था कि ये गरीबों की मदद करें उन्हे वे खुशियां दें उन गरीबों के मनों को खुश करें। बस जिस दिन इस दुनिया के अमीर (पैसे के अमीर ही नहीं बल्कि योग्यताओं के अमीर) गरीबों से भी सहानुभूति एवं प्यार करने लगेंगे तो दुनिया में आनन्द आने लगेगा।

मगर गरीबों का भी फर्ज है कि उन्हें जो भी मदद मिल रही है उसको भगवान का प्रसाद मानें तथा खुददार बने और अमीरों की दौलत पर योग्यता की दौलत पर

नजर न रखें उसे लूटने का प्रयास न करें बल्कि मेहनत करके खुद भी यह सब कमाऐं एवं खुद को भी अमीर बनाऐं। ताकि वे भी औरों की मदद कर सकें। गरीब एवं अमीर दोनों का ही फर्ज है कि भगवान का नाम रोशन करें उसे शार्मिन्दा न करे कि उन्होंने अमीर क्यों बनाऐ तथा गरीब क्यों बनाऐ क्योंकि भगवान के लिए तो जरुरी है यह सब क्योंकि दुनिया केवल अमीरों से भी नहीं चल सकती तथा केवल गरीबों से भी नहीं चल सकती है। अतः हम अपनी स्थिति पर बिल्कुल नहीं इतरायें बल्कि भगवान को अपनी दुनिया को प्यारे से तरीके से चलाने में उनकी मदद करें तथा भगवान के एक सराहनीय नुमाइन्दे बन जाऐं। क्योंकि यह सब भगवान ने अपनी दुनिया चलाने के लिए बनाया है।

यहां यह न समझे कि सभी अमीर सही तरीके से नहीं करते हैं। नहीं यह तो मैंने एक सामान्य एवं जनरल बात कही है बहुतेरे अमीर तथा बहुतेरे गरीब आज भी ऐसा ही करते हैं जैसा कि करना चाहिए। मैंने तो सभी के लिए एक मार्गदर्शन लिखा है जो ऐसा स्वयं या पहले से ही करते हैं तो वहां वे उस ही रास्ते पर कायम रहें क्योंकि यही सत्य तथा सदभावना एवं भगवान के द्वारा सराहनीय है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

मेरे से एक भक्त ने कहा कि रामायण पढते हुए आखों में ऑसू आ जाते हैं। रामायण में इतना प्यार इतनी करुणा तथा इतनी विनम्रता इतना बड़प्पन भरा हुआ है

तो पढ़ने पर प्रेम के ऑसू छलक ही जाते हैं।
मैंने कहा यही तो एक बहुत सुन्दर सी स्थिति है। सभी कहते हैं कि इन्सान अगर रो लेता है तो उसका मन हल्का साफ निर्मल हो जाता है स्त्रियां इस ही वजह से सीधे स्वभाव वाली होती हैं क्योंकि वे बात बात पर रो पडती हैं।
तो यह रामायण पढ़ते हुए समय–समय पर रो लेना तो बहुत ही अच्छी बात है। भगवान करें हम अपने भाग्य का रोना इस प्रकार रो लें तो बहुत बढ़िया। भगवान न करें कि हमें रुलाने के लिए दुख आएं या हमें दुख आने पर रोना पड़े हम अपने भाग्य का रोना प्रेमाश्रुओं से रोऐं तो बडे भाग्य की बात है तथा मान लिया कि हमारे भाग्य में रोना था ही नहीं तो भी प्रेमाश्रओं के द्वारा रोने से हम अपने जीवन में आने वाली खुशियों का भण्डार बढ़ा लेते है।

यही सत्य है इस तरह सोचें तथा सोच कर देखें यह तरीका है अपने मन को सुन्दर बनाने का।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

एक भक्त ने पूछा कि किसी को कैसे बदला जाए। मैंने कहा कि यह बदलना ऐसा है जैसे किसी सोच की धारा, सोच के बहाव को किसी दूसरी तरफ मोड़ना अर्थात धारा प्रवाह को बदलना। इसके दो तरीके हैं एक तो आप इस धारा के सामने आकर अड़ जाऐं तथा ताकत एवं बल से उस धारा को मोड़ दें मगर यहां यह है कि अगर आप में ताकत कम पड़ गयी तो यह प्रवाह

आप को तोड़ देगा तथा आपको फिर उसके साथ साथ बह जाना पडेगा या इसमें डूब जाओगे तथा विलीन हो जाओगे। तथा ज्यादातर ऐसा ही होता है इन्सान धारा प्रवाह की ताकत का अल्पानुमान करता है तथा भिड़ जाता है तथा अपना अस्तित्व मिटा बैठता है। ऐसे ही कलयुग बना है एक–एक सच्चा इन्सान, सीधा इन्सान टेढ़ा बना है। दूसरा तरीका है इस धारा प्रवाह के साथ साथ तैरना शुरु कर देना तथा अपना बल बढ़ाते रहना, अपने हाथ बढ़ाते रहना और फिर धीरे धीरे उस धारा को भी अपने साथ साथ ले आना और फिर उसे अपने हिसाब से लेकर चल देना उस बहाव को पता भी न चले कि वह पहले किसी दूसरे रास्ते बहता था। बस उसको अपने रामपन पर निरन्तर कायम रहना है तथा अपना बचाव रखना है बडी सीधी सी बात है जो रामपन नहीं होता वह रावणपन होता है अर्थात गलत है।

आप जल्दी न करें रामपन को छोडने में राम कभी नहीं टूटते और रामपन निभाते –निभाते टूट भी जाऐं तो क्या मगर कहा गया है कि अन्त में ये ही जीतते हैं। अन्त मे जीत राम की ही होती है कभी देर से कभी सबेर से।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

एक भक्त ने कहा कि आजकल राम बनना राम बन कर जीना कहां सम्भव है। आपको जीना है तो बदलना ही पड़ेगा।

मैने कहा नहीं ऐसा नहीं यह हमारा भ्रम है। राम को अपना रामपन छोडने की कभी भी जरुरत नहीं होती। बस होता यह है कि आपको रामपन को या यह कहो

कि अपने को जिताने कि इतनी जल्दी होती है कि आप रावणपन से भी जीतने में नहीं हिचकते बस यही गलती है। धैर्य रखना था और राम को तो कभी जीतने हारने की परवाह होती ही नहीं है वह तो बस हमेशा रामपन को कायम रखते हैं मगर ऐसा सब कहते हैं अन्त में जीत राम की ही होती है। धीरे–धीरे रावण अपना रास्ता बदल लेता है या रावण का दम निकल जाता है। राम तो कभी किसी को मारना चाहते ही नही हैं न तो रावण को न राम को उन्हें तो सभी को बचाना होता है राम को भी रावण को भी और अगर किसी का अपने कर्मो की वजह से दम निकल रहा होता है तो या तो वह अपने कर्म बदल लेता है या राम जी उसमें दखलंदाजी नहीं करते उसका दम निकल जाने देते हैं। बस अपने रामपन को दिन प्रतिदिन दिन दूना रात चौगुना बढाते रहते हैं। कहतें है एक ही रह पाता है राम या रावण जब राम तो बचाते हैं तथा रावण मारता है तो धीरे धीरे वह इतना अकेला पड़ जाता है कि उसका खुद का ही दम निकल जाता है। बस ऐसे ही रामराज्य आ जाएगा।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

आओ भगवान की इस दुनिया को रामराज्य जैसा सुन्दर बनाने में सहयोग करें। मेरे साथ आगे बढें इसे सीखें और मेरे साथ साथ बढ चलें। भगवान आपको पुकार रहे हैं आप भगवान के ही तो अंश है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

मस्त रहो अलमस्त राम की धुन में हो जा मत वाला।
मस्त भये तुलसी को देखा रामायण को रच डाला।

मस्त भया मीरा को देखा विष का प्याला पी डाला।।
मस्त

मस्त भयी शबरी को देखा झूठे बेर खिला डाला।
मस्त भये प्रहलाद को देखा खम्भे में राम दिखा डाला।।
मस्त

कुदरत ने हर रत्न को मन्थन के द्वारा पैदा किया है। मन्थन करना एक प्रक्रिया है जो खोज करती है। समुद्र मन्थन से लक्ष्मी जी प्रकट हुईं। दही के मन्थन से मक्खन, घी प्रकट होता है इसी प्रकार अपनी बुद्धि में अच्छे–अच्छे विचारों के मंथन से और सुन्दर तथा और सुन्दर विचार पैदा होते हैं जो दुनिया में क्रान्ति लाते हैं। कृपया इस बात पर ध्यान दें तथा अच्छी–अच्छी बातों का मन्थन करें तथा अपनी बुद्धि में से नये नये रामपन को उत्पन्न होने का मौका दे। तथा भगवान से प्रार्थना करें की कोई बहुत ही सुन्दर सा विचार उत्पन्न करें। मन्थन में सभी पैदा होता हैं अच्छा भी एवं बुरा भी बुरे को साईड करें एवं अच्छेपन का फायदा उठाऐं।

* * * * * * * * * * * * * * * * *

क्या आप धरती पर दोबारा से रामराज्य लाने में, इस दुनिया को जन्त्रत बनाने के काम में हमारे साथ हैं और अगर हां तो अपनी इच्छा को दिखाऐं। ताकि मिशन घर–घर जा सके तथा वहां रामराज्य स्थापित कर सके और उसे सींच सके।

इसके लिए आप मिशन को अपनी दोस्ती का सहयोग करें। अपने घरों में अपने आफिसों में, अपने सामाजिक संस्थानों में, अपने परिचितों की सभा बुलाऐं एवं

रामराज्य आहवाहन मिशन का **Demonstration** कराऐं ताकि घर घर में समाज ऑफिसों के हर व्यक्ति में रामराज्य की स्थापना की जा सके यह रामराज्य में जीना सिखा देगी। जब आप **Demonstration** देखेंगे तो एहसास करेगे कि कितना आसान है धरती पर फिर से रामराज्य ले आना तथा अपने जीवन को सुखी, धन्य तथा गौरवपूर्ण बना लेना। अपनी छुटटी के समय में अपने खाली समय में अपने राज्य के कार्य में यह राम जी का काम भी करें तथा राम जी के निजीजन बन जाऐं। हम आपके सहयोग व आपके आमन्त्रण का इन्तजार कर रहे हैं क्योंकि जब आप हमें बुलाते है याद करते हैं तभी तो हम दुनिया में रामराज्य बनाने का अर्थात राम जी काम कर पाते हैं। खुद भी करें यह राम जी का काम तथा हमसे भी करवाऐं राम जी का काम।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

आप सब भक्त ही तो हैं। भगवान की पूजा करते हैं तथा भगवान का ध्यान करते हैं कि भगवान भी तो कभी उनका ध्यान करेंगे और उन पर कृपा करेंगे। अब बस ऐसा ही समय आ गया है शायद भगवान का मन आ गया है कि वे आप सब को कुछ छोटी छोटी सी बातें सिखाकर आपके जीवन को सुन्दर खूबसूरत तथा खुशियों से भरा हुआ बना देना चाह रहे हैं।

आऐं तथा भगवान की इस कृपा को प्राप्त करके अब हम भी भगवान के जैसा सुन्दर जीवन,भगवान के जैसी खुशियां, भगवान के जैसे सुख तथा भगवान के जैसी आत्म सन्तुष्टि हासिल करें। आऐं और मेरा हाथ बटाऐं

कि मैं भगवान की इस सुन्दर सी कृपा को भगवान के प्यारे भक्तों में बांट सकूं।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

कृष्ण जी ने बताया कि हमें अन्य राजाओं की तरह अपनी शक्ति बढाने के लिए अथवा राज्य को स्थिर रखने के लिए युद्ध नहीं लडने पड़े। न ही अपनी प्रजा पर कर ही लगाने पड़े। यदि आप चाहते हैं कि आपकी प्रजा शक्तिशाली हो तो उसे आलस्य त्यागने की प्रेरणा दें और रहन सहन तथा कामकाज के तरीके सिखाऐं ऐसे युद्ध से मुझे घृणा है जिसमें रक्त बहे। मैंने ऐसा युद्ध कभी नहीं लड़ा और यदि लड़ना पड़ा तो केवल सत्य की रक्षा के लिए लड़ा।

धर्म के लिए तैयार रहना चाहिए यदि धर्म की खातिर मरना भी पड़े तो उसके लिए तैयार रहना चाहिए। मैनें अपना धन बढ़ाने के लिए हमेशा वह तरीके चुने जिनमें पृथ्वी की उत्पादकता से उत्पादन बढ़ाकर पैसा कमाया जा सके और उससे दूसरी सुख सुविधांए प्रजा के लिए उपलब्ध करायी जा सकें ।

वैसे तो इन्सान को फल पाने के लिए कर्म करना होता है तथा नहीं करता है तो दोष उसका है मगर जो भक्त है वहां भक्ति मार्ग की एक खासियत है कि भगवान अपने भक्त से वह सब भी खुद कराते हैं कि भक्त को फल मिल सके अर्थात कार्य कराने की जिम्मेदारी भी भगवान अपने ऊपर ही रखते हैं। भगवान अपने भक्त को किसी न किसी तरह फल प्राप्त कराते हैं।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

हर व्यक्ति हर समय कुछ न कुछ गुनता–मनन करता है अब उसके पास जो भी गुनने के लिए होगा उसे ही तो गुनेगा। वह जो देखता है जो सुनता है जो पढ़ता है उसे ही वह महसूस करता है उसे ही गुनता है। अब हमें देखने और सुनने के लिए तो बढ़िया मिल नहीं पा रहा है तो हम पढ़ ही अच्छा लें ताकि बुरे के साथ–साथ कुछ अच्छा भी गुना जाने लगे कि हम सारे ही बुरे न हो जाऐं कुछ तो अच्छे हो जाऐं और फिर वह अच्छापन दिन–दिन बढ़ता रहे।

* * * * * * * * * * * * * * * * *

आऐं राम बने क्योंकि एक राम ही तो हैं जो सत्य हैं। सफलता हमेशा अन्त में राम की ही तो होती है एक राम ही तो है जो सिर्फ सच्ची सफलता सच्चे सुख की तरफ ले जाते हैं।

आऐं तथा हमसे जाने हमसे सीखें कि राम कैसे बना जाता है। राम जिसका सच्चापन जिसका अच्छापन जिसकी सच्ची सफलताऐं देखकर समाज तो समाज भगवान तक ने भी उन्हें अपना भगवान बना लिया।

* * * * * * * * * * * * * * * * *

श्री राम तो ऐसे शरणागत वत्सल है कि वे अपने शरणागत को इतने प्यार से रखते हैं कि आप खुद भी अपने को इतनी अच्छी तरह नहीं रख सकते। वह अपने शरणागत से बस इतनी सी उम्मीद रखते हैं कि वह श्री राम जी की पसन्द एवं नापसन्द का ध्यान रखे, तथा वही करे जो उन्हें पसन्द है जिससे वे खुश होते हैं जब आप उनके शरणागत हो जाते हैं तो श्री राम जी भी

आपको आपका धर्म निभाने में मदद करते हैं तथा इसको अपनी जिम्मेदारी मानते हैं। उन्हें यह कतई पसन्द नहीं कि श्री राम जी के शरणागत के काम निन्दनीय हों। बस यही है श्री राम जी के शरणागत का धर्म और इसका ध्यान, श्री राम जी एवं श्री राम जी के शरणागत दोनों को ही रखना होता है ।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

जे आदमी रामायण पढ़ने लग जाता है वह विनम्र हो जाता है, क्षमाशील हो जाता है उसमें झुंझलाहट चिड़चिड़ाहट एवं दूसरों पर गुस्सा आना बन्द सा हो जाता है। उसकी समझ में आने लग जाती हैं दूसरों की परेशानियां, दूसरों की मजबूरिया एवं उनको दूसरों की नासमझियों पर दया आने लगती है। तथा किसी के प्रति भी कभी द्वेष भाव पैदा नहीं होता है।

अर्थात मन की बीमारियों की, विकारों की जड़ ही खत्म हो जाती है। उसका दिमाग भर जाता है आत्मसन्तोष से, आत्मगौरव से, आत्मबल से, आत्मविश्वास से एवं अनुभव से। यही कारण है कि अगर आपको जीवन में अपने जीवन पर गर्व का अनुभव करना है सच्ची खुशियां एवं सच्चा सुख हासिल करना है तो रामायण पढ़िये रामपन को जानिये एवं उसे आत्मसात कर लीजिए जो आपके दिमाग को सुलझाकर गहरा एवं समझदार बना देगा।

इससे खत्म हो जाऐंगी जड़ें जो दिमाग में बीमारियों के रस बनाती है तथा ऐसी जडें पैदा हो जाऐगी जो दिमागों में सुन्दर रस बनाती हैं अर्थात अमृत बनाती हैं।

हमे अवश्य खुश होना चाहिए कि उसमें तारीफ करने की आदत तो है अगर यह यहां किसी और की तारीफ कर रहा है तो कहीं और हमारी भी करता होगा । अर्थात यह अधिकारी है कि इसके साथ अच्छे–अच्छे कार्य किऐ जायें। इस प्रकार बढ़ता चला जाता है अच्छाइयों का समुद्र यह ही रामपन है।

* * * * * * * * * * * * * * * * *

हम सामान्यतः किसी न किसी तरह बस अपना काम बनाने में अपनी समस्याओं, कार्यो को सुलझाने में लगे रहते हैं। हर काम की 2 स्थितियां होती हैं एक तो दूसरे से हमारा काम बनना होता है तथा दूसरी तरफ हमारे से दूसरे का काम बनना होता है। बस सामान्यतः यही गड़बड़ हो रही है कि हम इतने व्यस्त हैं कि हम बस काम के पहले पक्ष से ही मतलब रख रहे हैं दूसरे पक्ष की बिलकुल परवाह नहीं कर रहे हैं दूसरे का काम बन जाए चाहे बिगड़ जाए।

जिस दिन हम दूसरे पक्ष का भी पूर्णतः ख्याल रखने लगते हैं अर्थात जैसे हम दूसरे से अपना काम बनाते हैं वैसे ही अपने से दूसरे का काम भी बनवाते हैं उसे भी नहीं बिगडने देते हैं तो यहीं पर हम राम हो जाते हैं हम यहां दूसरे की भी मदद करते हैं कि उसका काम न बिगड़ जाए। हम सोचते हैं समझते हैं अगर दूसरा कोई गलती कर रहा है तो उसको सुधरवाते हैं कि कहीं उसका भी काम न बिगड़ जाऐ।

इसके द्वारा हमेशा हम तथा साथ–साथ दूसरे भी प्रसन्न रहते हैं तथा दूसरा एवं हम दोनों ही दुखी या

पापी होने से बचते हैं।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

संत विषयों में लिप्त नहीं होते, शील एवं सदगुणों की खान होते हैं उन्हें पराया दुख देखकर दुख तथा पराया सुख देखकर सुख होता है। वे सबमें, सर्वत्र सब समय समता रखते है उनके मन में कोई उनका शत्रु नहीं है, वे मद से रहित, वैराग्यवान होते हैं तथा लोभ, क्रोध, हर्ष और भय का त्याग किये हुए रहते हैं।

उनका चित बड़ा कोमल होता है वे दीनों पर दया करते हैं तथा मन वचन और कर्म से मेरी निष्कपट भक्ति करते हैं। सबको सम्मान देते हैं पर स्वयं मानरहित होते हैं, भरत जैसे प्राणी (संतजन) मेरे प्राणों के समान हैं। उनको कोई कामना नहीं होती है वे मेरे नाम के परायण होते हैं शान्ति, वैराग्य, विनय और प्रसन्नता के घर होते हैं उनमें शीतलता, सरलता, सबके प्रति मित्रभाव एवं ब्राह्मणों के चरणों में प्रीति होती है, जो धर्मों को उत्पन्न करने वाली है। हे तात ये सब लक्षण जिसके हदय में बसते हों उन्हे सच्चा सन्त जानना। जो शम (मन का निग्रह), दम (इन्द्रियों के निग्रह), नियम और नीति से कभी विचलित नहीं होते और मुख से कठोर वचन नहीं बोलते, जिन्हें निन्दा एवं बड़ाई दोनों समान हैं और मेरे चरण कमलों में जिनकी ममता है, वे गुणों के धाम और सुख की राशि संतजन मुझे प्राणों के समान प्रिय हैं।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

मैने जब विचार किया तो पाया कि दुनिया का बहुत बड़ा हिस्सा (शायद 90 प्रतिशत) जिस सम्बन्ध से जुडा

हुआ है वह है स्वामी–सेवक का, कर्मचारी व नियोक्ता का, मालिक व नौकर का अर्थात अगर इस सम्बन्ध को ठीक से निभाना आ जाए तो दुनिया का एक बड़ा हिस्सा बढ़िया हो जाएगा, अर्थात सुखों से, खुशियों से भरपूर एवं दुखों से मुक्त हो जाएगा क्योंकि ज्यादातर दुख इस रिश्ते को ठीक से न निभाने के कारण ही हैं।

रामायण में लिखा है कि सेवक धर्म निभाना बहुत कठिन है क्योंकि इस धर्म में सेवक का हित एवं स्वामी का हित आपस में आमने–सामने खड़ें हैं एवं एक दूसरे के विरोधी हैं। अगर सेवक अपना हित देखता है तो स्वाामी के हित को चोट पहुंचती है तथा अगर वह स्वामी के हित को देखता है तो उसके अपने हित को ठेस पहुँचती है।

सिर्फ एक ही स्थिति हैं जहां पर सेवक धर्म ठीक से निभ पाता है वह है जब स्वामी सेवक के हित का भी खुद ही पूरा ध्यान रखता है क्योंकि वह अगर चाहे तो बहुत ही कुशलतापूर्वक अपने सेवक के हित का ध्यान रख सकता है क्योंकि वह ज्यादा समझदार होता है, उसको ज्यादा अनुभव होता है एवं वह ज्यादा साधन सम्पन्न भी होता है जब ऐसा होता है तो सेवक का काम बहुत ही आसान हो जाता है, अर्थात उसका काम सिर्फ अपने स्वामी के हित का ही ध्यान रखना रह जाता है क्योंकि उस ही में दोनों का हित है और यह एक ऐसी स्थिति है तथा जहां भी ऐसी स्थिति होती है वहां चारों तरफ खुशियां ही खुशियां होती है, फायदे ही फायदे होते हैं, नुकसान की गुंजाइशें ही खत्म हो जाती हैं और

बस यही तो रामराज्य है। तथा इस स्थिति में ही चहुमुंखी विकास होता है।

कोशिश करें, अभ्यास करें क्योंकि अभ्यास से सब सम्भव है, सेवकों का धर्म है सच्चे सेवक बनें व स्वामीयों का धर्म है अच्छे स्वामी बनें कि आपके सेवक आप जैसा स्वामी पाकर धन्य हो जाऐं अगर आप ऐसा कर पाऐ तो आपका जीवन धन्य हो जाएगा तथा भगवान का रामराज्य बनाने का लक्ष्य पूरा हो जाएगा।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

जब हमारा रामायण के बारे में ऐसा भाव हो जाता है कि देखें आज रामायण हमें क्या सिखाऐगी अर्थात जब हम ऐसे भाव से रामायण पढते हैं तो धीरे–धीरे हमारी सोच हमारा विवेक बदलने लग जाता है हमारी सोच श्रीराम जैसी सोच होने लग जाती है। अर्थात जब रामायण हमारी शिक्षिका, हमारी गुरु हो जाती है जब हम नित्य प्रति रामायण के चरणों में इस भाव से सिर नवाते हैं इस भाव से जब वहां जाते है तो हमारा चित्त निर्मल, कोमल एवं सुन्दर होने लग जाता है। जो हमारे जीवन को, हमारे राज्य को भी सुन्दर बनाने लग जाता है क्योंकि राजा के विवेक पर ही राज्य का भविष्य निर्भर करता है।

रामायण की संगत का एक विशेश फल है जो सभी को प्राप्त होता है अगर आप इस की सच्चे मन से एवं सतत् संगत रखते हैं। वह फल है कि यह सिखा देती है आपको सत्य में जीना, विनम्रता, अनुशासन एवं दूसरे की परेशानी को समझ लेने वाला विवेक जो सफलता

की कुंजी है रामायण की संगति से धीरे–धीरे ये सब आप में आ ही जाते हैं, और फिर आप अपने जीवन को सफल बना पाते हैं।

* * * * * * * * * * * * * * * * *

घर के लोगों को ध्यान रखना है कि ये सब 'रामराज्य आहवाहन मिशन' के लोग हैं अतः उनकी भाषा, उनका व्यवहार ऐसा होना चाहिए कि राम का नाम बदनाम न हो हमेशा ही गम्भीरता से बारीकी से इस बात का ध्यान रखें कि राम का नाम रोशन हो।

आपको क्या करना है आपको अपने को राम बनाना है नहीं सोचना है छोडो राम वाम में क्या रखा है सब बेकार है क्यों क्योंकि अभी आप नहीं सोच सकते राम बनने पर क्या–क्या आनन्द आता है बस आप तो अपने को राम बनाऐं तथा फिर 1–2 साल बाद पुनर्विचार करें यह कठिन नहीं है बडा आसान है। नित्यप्रति रामायण पढें तथा रामायण से सीखें राम कैसे चलते थे, राम कैसे रहते थे, राम कैसे बोलते थे, राम कैसे सोचते थे, राम कैसा व्यवहार करते थे तथा कृष्ण से सीखें वे कैसे सबके दोस्त रहते थे, तथा शिव से सीखें अच्छे–बुरों, राक्षसों के साथ कैसे निभाया जाता है उन सभी को कैसे अपना बनाया जाता है।

आपको इसे आगे बढ़ाना है, तथा लोगों में पब्लिक में भी यह सब प्यास पैदा करनी है, प्यास होगी तो राह होगी बस रामराज्य आपके सामने है।

* * * * * * * * * * * * * * * * *

आज का जमाना है मल्टीलेवल मारकेटिंग का। जब

लोग इससे अपना व्यवसाय, व्यापार को इतना ज्यादा बढ़ा लेते हैं तो हम इसके द्वारा राम की प्यास को भी तो बढा पायेंगे अपने राम का व्यवसाय भी तो खूब बढा पाऐंगे राम की प्यास को खूब पैदा कर पाऐंगे एवं घर–घर में रामराज्य होगा बस देखते रहो।

* * * * * * * * * * * * * * * *

आज अलका ने सपना देखा की राजा बनने के लिए कठिन प्रशिक्षण की आवश्यकता है एक 35 मील की गुफा है उसमें कहीं किसी राजा का प्रशिक्षण, कहीं किसी राजा का प्रशिक्षण दिया जाता है यह कृष्ण जी से सम्बन्धित है तथा जो भी यह मंजिल तय कर लेता है निश्चित रुप से मजबूत राजा बन जाता हैं लोग इसमें जाते हैं मगर देखकर ही वापस आ जाते हैं तथा इसे कर पाने की हिम्मत नहीं जुटा पाते हैं।

इसका मै यही अभिप्राय समझता हूं जैसे कि मेरे यहां हर एक को जैसे राजा बनाना है तो यह तभी हो पाएगा जब हर राजा को राजा के नियम व सिद्धान्तों, अनुशासनों, कांटो का मुकुट पहनने की हिम्मत का प्रशिक्षण दिया जाएगा। राजा बनना, कांटों का मुकुट पहनना जैसा होता है जो ऐसा करता है वही राज्य चला पाता है अन्यथा राज्य बिखर जाता है तथा दूसरे राजाओं द्वारा लूट लिया जाता है।

इसके लिए राजनीति, सत्संग, व्यवहार साथ–साथ पढ़ना होगा तथा सख्ती से जीवन में उतारना होगा।

* * * * * * * * * * * * * * * *

हे राम जी, जैसा आप जानते हैं कि मैं आपका निजी

जन बनना चाहता हूँ श्री काक भुसुण्डि जैसा आपके गुणगान करने वाला कथाकार बनना चाहता हूँ कि जहां जहां उनकी कथा होती थी वहां मीलों तक आपकी माया अर्थात अविद्या नहीं व्यापती थी, मैं भरत जी जैसा साधु–सात्विक राजा बनना चाहता हूँ जिस पर आप गर्व से गर्व करते हैं। तथा आपके जैसा दुनिया का हितकारी राजा कि उन्होंने सारी दुनिया में जन्त्रत जैसा रामराज्य बना दिया।

आप जानते ही हैं कि मैं बहुत निर्बल हूँ गुरु जी ने कहा है कि चिन्ता मत कर तु राजा राम जी की पूजा कर वे तुझे राम जैसा बना देंगे और जा दुनिया भर में रामराज्य बना।

अतः प्रभु मैं आपकी पूजा तथा प्रार्थना कर रहा हूँ ताकि आप मुझे अर्थात 'रामराज्य आहवाहन मिशन' के अध्यक्ष रुपी राजा को राम अर्थात राजा राम बना दें ताकि वह दुनिया भर के राजाओं को राम जैसा बना सके तथा दुनिया भर में रामराज्य ला सके जिससे भगवान आप का मान बढ़े आपके भक्त का मान बढ़े, आपके भक्ति मार्ग का मान बढे तथा आप इस दुनिया पर, इस दुनिया में इन्सान की उत्पत्ति पर गर्व कर सकें। कृपया मेरी प्रार्थना स्वीकार करें। आपकी अति कृपा होगी।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

<u>अच्छाई और बुराई का युद्ध</u> फर्क यह है किअच्छाई की जीत तो इसमें है कि या तो बुराई भी अच्छाई का खुद ही साथ देने लगे या ऐसी हार जो बुराई अपनी जीत पर बेईज्जती महसूस करे क्योंकि अच्छाई तो कभी

बेईज्जती महसूस करती ही नहीं उसके लिए तो जीत या हार सब समान होते हैं । जीतने का शौक ही तो बुराई को बढ़ाता है तथा बुराई की जीत जीत में होती है क्योंकि बुराई अगर हार गयी तो हार ही गयी जबकि अगर अच्छाई हार गई तथा हार को सह पाई तो इसका मतलब बुराई कमजोर पड़ गयी अर्थात अच्छाई का बुराई पर प्रभाव जम रहा है तथा बुराई अच्छाई के सामने कमजोर पड़ने लगी है। धीरे धीरे बुराई में अच्छाई आ जाएगी तथा अच्छाई की जीत इसमें है कि बुराई का भी मन अच्छाई का साथ देने का करने लगे। मन में आने लगे कि मैं अच्छाई से क्यों लड़ूं न कि इसमें कि अगर आज बुराई हार गयी तो कल अपने को और मजबूत बना कर लड़े।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

सब नजरिये का खेल है आप किसी स्थिति को किस नजरिये से देखते हैं बस यही है महत्वपूर्ण। अगर आप राम वाले नजरिये से देखते हैं तो राम जैसा दिखाई देता है और अगर अन्यथा देखते हैं तो वैसा दिखायी देता है । राम तो रावण को भी सम्मान दिलाने के प्रयास में लगे रहते हैं अगर दोनों का युद्ध होता है तो अलग बात है युद्ध करते हैं मगर उससे नफरत नहीं करते हैं तथा पूरी कोशिश करते हैं कि यह भी अच्छा हो जाए तथा मेरी तरह ही सब इसकी भी प्रंशसा करें एवं सम्मान करें । बस यही है राम का नजरिया राम और रावण का फर्क । रावण तो सिर्फ नीचा दिखाने की तथा बेईज्जती करने की सोचता है यहां तक कि अगर

राम की बेईज्जती करने के लिए उसे अपना भी अपमान कराना पडे तो नहीं चूकता।

जब हमारा नजरिया राम जैसा हो जाता है तो दुश्मन हमारे दोस्त बनने लग जाते हैं, दुश्मन घटने लग जाते है ,हमारे हितैषी बढ़ने लग जाते हैं अर्थात जीवन के क्लेश न्यूनता की तरफ आने लग जाते हैं और जीवन क्लेश रहित होने लग जाता है यही तो स्वर्ग है, यही तो रामराज्य है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

हमारे मिशन का उददेश्य है कि हम सीखें अपने राज्य को भगवान के तरीके से चलाना अर्थात अगर भगवान सच्चिदानंद हमारे राज्य को चला रहे होते तो कैसे चलाते, अपनी प्रजा को कैसे खुश रखते, कैसी शिक्षाऐं प्रदान कराते, राज्य में आने वाली समस्याओं को कैसे सुलझाते तथा कैसे अपनी किस्मत अपने राज्य की किस्मत एवं अपनी प्रजा की किस्मत बनाते तथा किस प्रकार स्वयं को एवं अपने राज्य को गौरवान्वित करते। आप देखेंगे कि आप धीमे धीमे जीने की इस कला में पारंगत हो जाऐगे क्योंकि अभ्यास इन्सान को होशियार बना देता है। (**practice makes man perfect**। मिशन कहता है कि आप जो भी कर रहे हैं जहां भी कर रहे हैं चाहें अच्छा या बुरा आप सोचें कि अगर आप की जगह आप न होते मगर भगवान होते तो क्या करते, कैसे करते। भगवान तो सभी से डील (व्यवहार) कर लेते हैं अच्छों से, बुरों से, देवताओं से, राक्षसों से तो फिर क्या बात है सभी कुछ भगवान की तरह भी किया जा सकता है। उदाहरण के तौर पर

आपको किसी को डांटना है तो भगवान की नजर से देख सकते हैं कि वे कैसे डांटते। क्या प्यार से डांटते या नहीं डांटते या कस के डांटते आदि। इस प्रकार आप पाऐंगे आप स्वः सुनियन्त्रित होने लगेगे धीमे धीमे भगवान जैसे हो जाऐंगे शायद लोग भी आपको भगवान कहने लगेंगे। प्रयोग करें।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

राम के भक्तों का कर्तव्य

1. अपने घर को सुन्दर बनाना राम का प्रोजेक्ट है।
2. हमें यही सिद्ध करना है, हममें अच्छाई है हम हमेशा ही अच्छे रहेंगे तथा सिर्फ अच्छाई की तरफ ही बढेंगे। कभी भी बुराई का रास्ता हमें पसन्द आएगा ही नहीं जो मिलेगा अच्छाई से ही मिलेगा। तथा अच्छाई तो इसी में है जो हार भी जाती है तो दुखी नहीं होती अपने को और अच्छा बनाती है इतना कि बुराई अपना रास्ता बदलने लग जाती है खुद भी अच्छाई से प्रभावित होने लग जाती है कि बुराई को अपना मान बचाना भी भारी हो जाता है तथा अच्छाई बुराई का भी मान बचाने में उसकी मदद करती है।
3. राम के युद्ध में कभी–कभी मात खाकर भी वापस आना पडता है तो क्या हम राम को छोड़ देते हैं। अगर हम राम के साथ लगे रहते हैं तो निश्चित है अन्त में जीत तो राम की ही होती है। और जो भी राम के साथ होता है ठीक है पर हम राम को नहीं छोडते हैं।
4. मेरी पत्नी मेरे बच्चे मेरे हैं, मै उनका संरक्षक हूँ, पति (गार्जियन) को चाहिए कि बच्चे चाहें बेवकूफ हों,

बदतमीज हों, नासमझ हों, हम उन्हें अच्छा और अच्छा बनाऐगे, यही राम हैं।

5. अब राम का काम है जब भी राम जी (भगवान) जैसे भी मेरे लिए तय करेंगे मैं वैसे करता रहूंगा उसी में खुश रहूंगा और अच्छा बनाने के लिए प्रयास करुंगा। बच्चे मेरे हैं मेरी जिम्मेदारी हैं, राम जी करें मैं अपनी जिम्मेदारी अच्छी तरह तथा सुन्दर तरीके से निभाऊँ, और राम का, राम के भक्तों का मान बढाऊँ।

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

धीरे–धीरे आगे बृढ़ो, अभी हिंसा घटी है आगे आगे मानसिक हिंसा भी घट जाऐगी।

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

हम चाहते हैं कि विभिन्न प्रकार के मैनेजमेंट्स के निचोड़ जो मनुष्य के सामान्य जीवन में बहुत कारगर सिद्ध होते हैं उनकी शिक्षा सामान्य मनुष्य को भी प्रदान करें ताकि वह भी शिक्षित व सभ्य सा हो जाऐ उसका परिवार (राज्य) भी इन कुशलताओं का आनन्द उठा सके। उदाहरणार्थ :–

1. आप **Guide** (गाइडस) को देखें सभी प्यारा सा बोलते हैं, **well dressed** होते हैं अतः उनका कोर्स उन्हें यह सिखा देता है अर्थात उस कोर्स का तरीका उसका निचोड़ सामान्य मनुष्य को सिखाया जाए तो वे भी कुछ–कुछ ऐसे हो जाऐंगे।

2. होटल मैनेजमैंट, (सभी सुन्दर, सभ्य, विनम्र भाषा

वाले, सुसभ्य पोशाक)

3. चार्टड एकाउटैन्ट (सभी तेज, तर्रार हर समय फायदा–नुकसान की सोचना)

4. **M.B.A.** (सभी) मैनेज करने की कला में निपुण)

5. प्रशासक (**Administration**) सभी व्यवस्थाऐं बनाने में कुशल होते हैं।

6. पी0 आर0ओ0 (सभी लोग सम्बन्धों को अच्छा रखने में व्यवहार में कुशल होते हैं)।

इस प्रकार अगर हम देखें तो कोर्सों का जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है क्योंकि उस ट्रेड से सम्बन्धित लोगों का एक सा व्यवहार क्यों होता है।

अतः हमारा मिशन इन कोर्स की शिक्षाओं का निचोड़ बनाने में उस निचोड़ को जन–जन तक पहुंचाने के आसान एवं सरल तरीकों को ढूंढने में लगा हुआ है आप भी हमारी मदद करें। ऐसे कोर्स बताऐं, ऐसे साधन बताऐं तथा ये सब साधन बताऐं तथा ये सब साधन हमें उपलब्ध कराने में हमारी मदद करें।

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

काश आप भगवान होते! काश आप राम होते तो हमारा कितना आनन्द आ जाता हम कितने खुश रहा करते।

आप हमें कभी कुछ दिया करते कभी कुछ दिया करते, क्योंकि राम तो बेवजह ही कभी किसी पर, कभी किसी पर कृपा किया करते हैं। हे राम जी काश आप हमें भी अपने जैसा प्यारा बनाऐं दें।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

हम क्यों सब कुछ अपनी तरह से चलाने के लिए लड़ते झगड़ते रहते हैं हम क्यों नही समझ पाते कि यह भगवान की दुनिया है हमारी नहीं, हमें तो भगवान ने अपनी दुनिया का छोटा सा हिस्सा दे दिया है अपनी कार्य कुशलता अच्छापन दिखाने के लिए कि आप भगवान के बन्दों का कितना (जो कि आपके अधिकार क्षेत्र में आते हैं) जीवन सफल करते हैं या कितना उनको अच्छा, विनम्र, कार्यकुशल बना पाते हैं कितना उनके जीवन को धन्य कर पाते हैं। आओ भगवान के बन्दों भगवान का सच्चा अनुसरण करो भगवान के सच्चे बच्चे बनो। सच्चे राजा बनो।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

अपनी इच्छा का फल पाने के लिए अपने को बुरा न बनाऐं फल तो अपने हिसाब से ही आएगा तुम्हारे हिसाब से नहीं सब्र करें श्रद्धा रखें।

अगर हम देखें तो सारे क्लेश ही इस बात के हैं जब हम उसको जो हमें भगवान दे रहा है उससे हम सहमत नहीं हो पाते हैं उसे हम स्वीकार नहीं कर पाते हैं, हमारे साथ तो जो भी होता है, वह सब भगवान ही तो करते हैं। तो फिर हम क्यों जिद करते हैं।

अगर हम अपना विचार ऐसा बनाऐं कि हमारा प्रयास तो ऐसा हो कि हमारे साथ तथा दूसरों के साथ जो हो वह अच्छा हो, उसे अच्छा बनाया जा सके, कम अच्छा हो रहा है तो उसे ज्यादा अच्छा और ज्यादा अच्छा बनाया जा सके। मगर हम स्वीकार उसे कर लें, जो भी हम से या औरों से हो पाए क्योंकि यह जरुरी तो नहीं हम जो भी चाहें वह ही हो वह तो तभी हो पाएगा जब भगवान चाहेंगे। बस कर्म करें एवं फल की इच्छा भगवान इच्छा समर्पित करें।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

प्रशंसा : जरुरी तो नहीं है कि हमारी प्रशंसा ही हो, हम सिर्फ और सिर्फ प्रशंसा ही क्यों चाहते हैं और अभी ही क्यों चाहते हैं। अगर प्रशंसनीय काम है तो प्रशंसा होगी ही सब्र रखें जब वे प्रशंसनीय काम दूसरों की समझ में आऐंगे तो वे प्रशंसा करेंगे जब तक उनको नहीं लगता वे प्रशंसा क्यों करें, सब्र रखें सब्र का फल मीठा होता है। अगर आप लगातार प्रशंसनीय काम करते रहेंगे, करते रहेंगे, तो एक न एक दिन आप पहचाने ही जाऐंगे, एक न पहचानेगा तो दूसरा पहचानेगा, आज न पहचानेगा तो कल पहचानेगा, सच की पहचान एक न एक दिन हो ही जाती है यही सत्य है सब्र करें।

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

राम–राम जपना पराया माल अपना अक्सर ऐसा कहा जाता है मुझे बड़ा दुख होता है ऐसा क्यों राम के नाम को ऐसा क्यों कह दिया जाता है मैंने विषय का मन्थन किया एवं विचार किया तो जाना यह राममय होने का

प्रभाव है जो इन्सान की जल्दी से समझ में नहीं आ पाता है वह है कि जब एक इन्सान राममय हो जाता है तो उसे सारी दुनिया में सब कुछ में राम (भगवान) दिखाई देने लगते हैं एवं सब कुछ श्री राम का ही दिखाई देता है और सब उसे दिखाई ही नहीं देते उसे कुछ भी ऐसा लगता ही नहीं कि यह किसी और का है वह तो एक राम का बच्चा सा होता है, सभी कुछ उसे राम का दिखाई देता है, उसका कुछ मन करता है तो राम जी से कहता है मैं ले लूं। राम जी उसे प्यार करते अतः तो कभी मना नहीं करते कहते हैं ले ले बस यही होता है भाव और किसी का भी हो कुछ यह उसे अपने राम जी का ही मानता है, इसे कोई मना भी नहीं करता अतः इसे सब कुछ मिलता रहता है। बस यही है कारण कि वह सब कुछ राम जी का मानता है तथा राम जी उसे दे भी देते हैं। मगर वह कभी इस भाव से नहीं लेता कि मैं किसी दूसरे का हिस्सा–माल आदि ले लूँ, वह हर किसी का दुखः सुखः सब कुछ राम जी का ही मानता है तथा उसे अपनाता है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

मै समझता हूं कि तुम्हे अगर भगवान का दोस्त बनना है या भगवान को अपना दोस्त बनाना है तो तुम स्त्री जाति के दोस्त बन जाओ क्योंकि वे हर किसी की दोस्त नहीं बनतीं। वे मनों की खिलाड़ी हैं, मनों की बातें जानती हैं, मन को कैसे खुश किया जाता है यह जानती हैं तथा उनसे दोस्ती करने के लिए मन का सच्चा तथा साफ सुथरा होना, निर्मल होना, सुन्दर

होना आवश्यक है और जब तुम्हारा मन सुन्दर हो जाता है तो भगवान भी तुम्हारे दोस्त बन जाते है।
अतः जब स्त्रियां तुम्हारी दोस्त बनने लगें तो समझ लेना कि तुम भगवान के क़रीब पहुंच रहे हो। इसके लिए मन का न केवल निर्मल, सुन्दर होना आवश्यक है बल्कि ऐसा दिखना भी आवश्यक है। अगर ऐसा नही दिखता तो ये तुम्हारी दोस्त नहीं बनतीं।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

हे हनुमान भक्तों, हे महानुभानों व श्री हनुमान की पूजा करने वालों आज श्री हनुमान जी की इच्छा हो रही है कि धरती पर दोबारा से रामराज्य जैसा सुन्दर वातावरण बनाया जाए जहां हर इन्सान, हर जीव, हिन्दू मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, कोई भी कार्य करने वाला हर जीव सुखी होता था अब वे अपने भक्तों के जीवन में, ईश्वर की सन्तान के जीवन में रामराज्य जैसी खुशियां लाकर उनके जीवन को सुखी करना चाहते हैं ताकि श्री राम जी श्री हनुमान जी की सेवा से श्री हनुमान जी के सेवकों की सेवा से खुश हो जाऐं।

आगे बढें हमें श्री राम जी को खुश करना है क्योंकि श्री राम जी तो सभी दीन दुखियों सभी प्रकार के दुखियों के दुख से दुखी हो जाते हैं तथा उन सभी को अपने जैसा अपने निजी जनों जैसा सुखी बनाना चाहते हैं।

आओ सेवा में लग जाएं और अपने हनुमान जी का श्री राम जी की नजरों में मान बढाऐं।

सेवाऐं:–

1. मन्दिरों में या जगह जगह विचार गोष्ठियों का आयोजन करें ताकि सभी लोगों के मनों में दिमागों में रामराज्य लाने का विचार जगाया जा सके ऐसी चेतना उनमें जगायी जा सके।

2. रामराज्य आहवाहन मिशन की विचार भावना को, रामराज्य लाने के आसान तरीके जानकर सर्वजनों के समक्ष उन्हे रखें।

3. रामराज्य आहवाहन मिशन का संदेश सुनें, समझें व सुनाऐं तथा समझाऐं।

4. अपने मोहल्ले, गलियों में, सभाओं में इस विचार की भावना, सेवा की स्थापना करें प्रभात फेरी करें।

5.जब रामराज्य आहवाहन मिशन की रथयात्रा या प्रभात फेरी निकले तो उसमें रुचि लेवें, इस विचार को ग्रहण करें तथा अपने जीवन को आसान, सुखी एवं समृद्ध बनाऐं।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

कलयुग क्या है, एक ऐसा युग जहां अधिकांश मन बीमार हो गये है, मानसिक बीमारियों से इंसान परेशान हो गया है।

कैसे हुए हैं ये मन बीमार। बस निन्दा–परनिन्दा, मनों को दूसरों को समझना न आया और फिर दूसरे गलत ही हे गये कि जब हमें गलत समझ ही लिया तो फिर अब हम तो गलत ही हैं और इस प्रकार सबने बुराईयों

का निन्दाओं का संसार बना लिया यही है कारण। कहते हैं एक अच्छा इन्सान होने के लिए मन का निर्मल होना बड़ा आवश्यक है, तथा मन निन्दा करने से, सुनने से गन्दा हो जाता है मल युक्त हो जाता है। जब मन गन्दा हो जाता है तो फिर धीरे–धीरे बीमार हो जाता है।

अब क्या तरीका है गन्दे मनों को साफ करने का निर्मल करने का बस क्षमाशीलता। क्षमा कर देना तथा दूसरों को व अपने को सिर्फ और सिर्फ भगवान जैसा प्यारा बनाना ही है क्योंकि आप देखें कि भगवान तो कभी शिकवा शिकायत नहीं करते बस हर किसी की यथासम्भव मदद में ही विश्वास रखते हैं अर्थात बडप्पन हमेशा ही बड़प्पन दिखाते है तथा बड़प्पन का एहसान भी नहीं अर्थात उन्हे बड़प्पन का घमंड भी नहीं है। यही है तरीका मैले हुए मन को धीमे – धीमे निर्मल बनाने का।
राम राम रटने से अपने गुरु मन्त्र का जाप निरन्तर जाप करने से भी मन निर्मल होता है जिन्होंने यह किया है वे इसका महत्व जानते है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

आप आऐं आगे बढे जो हो चुका उसे भूलें तथा आगे अपना तथा दूसरों का मन मैला न करें अर्थात किसी की बुराई न देखें, दिखायी दे जाएतो क्षमा कर दें, बड़प्पन दिखाऐं। निर्मल संसार बनाना ही तो रामराज्य है। श्री राम के जैसे बनें।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

आपकी सब प्रशंसा करें आप भी अपने पर गर्व कर सकें आप में निम्न बातें कम से कम होनी ही चाहिए।

1. आपकी वाणी मीठी हो अर्थात आपकी वाणी में झल्लाहट नहीं होनी चाहिए, आपकी बोली दूसरों को प्यारी लगनी चाहिए, आपकी वाणी में डांटने वाला सा अन्दाज नहीं होना चाहिए बल्कि पुचकारने वाला सा अंदाज होना चाहिए। आपकी वाणी में विनम्रता हो।

2. मन के अनुसार कार्य करने की कार्यकुशलता आप में हो, अपने मन को समझना सीखें, फिर दूसरों के मन को समझना सीखें, यह आप समझ सकते हैं आप अपने मन को दूसरे की स्थिति में रखकर महसूस करें कि उसे कैसा लग रहा होगा, उसका क्या करने का, क्या पाने का मन कर रहा होगा। आप इस तरह काफी हद तक समझ पाऐंगे तथा काफी हद तक दूसरों के मन पसन्द बन पाऐंगे।

3. अपने मन को खुश रखना इसके लिए आप अपने मन को समझना सीखें, अपना मन दूसरों को समझाना अगर दूसरे आपके मन की इच्छा को समझ गये तो हो सकता है आपका मन पसन्द कर दें और तुम्हारा मजा आनन्द आ जाऐ।

आप से हमारी अपेक्षाऐं :–

1. कहते हैं रामायण में लिखा है कि सत्संग के बिना 'राम' नहीं मिलते। सत्संग का मतलब सन्तों का संग, 'रामराज्य आहवाहन मिशन' को एक संत मानें तथा ऐसी व्यवस्था बना लें कि निरन्तर उसका आपके जीवन में संग बना रहे, आपकी गहृस्थी या कोई विचार उलझे तो यह आपकी उसको श्रीराम बुद्धि के अनुसार सुलझाने में मदद करे।
2. आप भी अन्य सब लोगों के लिए सत्संग बनें तथा उनको भी इस सुन्दर सी राह पर रखें कहते हैं जो बोओगे वही काटोगे, जो दोगे वही पाओगे, अपने आस–पास, अपने सम्पर्क में आने वाले लोगों की बुद्धि को भी सुन्दर बुद्धि बनाने का प्रयास करें।
3. आप इस मिशन पर विश्वास करें कि यह सच्चा है क्योंकि यह सिखाने निकला है सच की राह, सच्ची सच की राह क्योंकि अन्त भला तो सब भला और अंत में तो जीत सच की राह की ही होती है तथा लम्बे समय तक तो सच ही टिकता है, सच कभी परेशानियां नहीं देता, यह हमारा भ्रम है बस सिर्फ हमें लगता है मगर यह हमेशा के लिए हमें आने वाली परेशानियों से बचा लेता है। सीखें 'सच्ची सच की राह'।
4. आप अपने साम्राज्य, राज्य, घर, दुकार में एक सुबह की, और एक शाम की पूजा (प्रार्थना) अवश्य करें जिसमें अपने धर्मानुसार इस ब्रह्माण्ड की सर्वोच्च शक्ति 'परमात्मा' के लिए दीपक जलाऐं उनकी आरती करें उनका ध्यान करें, उनसे प्रार्थना करें। कोशिश करें आपके राज्य के सभी लोग यथा सम्भव, सुखानुसार उसमें शामिल हों, शरिक हों ताकि हम और हमारे राज्य के सभी लोगों को, क्योंकि यह राज्स परमात्मा की रोज नियम से पूजा, प्रार्थना करता है, परमात्मा की कृपा पाने के अधिकारह हो सकें, राजा का कर्तव्य है ऐसी व्यवस्था बना देना।
5. राजा का कर्तव्य है कि कहीं भी लोगों के मनों में कोई दबे हुए शिकवे, शिकायत न रहें जो Communication Gap से हो जाते है व्यवस्था बनायें। सम्भव है तो रोज खाने पर, पूजा

पर, या साप्ताहिक किसी खेल को आयोजन करके या एकविशेष भोजन पर सब लोग साथ बैठें ताकि सभी के मनों का मेल हो क्योंकि 'सब मन मिले का मेला' है।

6. हम श्री राम के उस रूप का जो कि वह अपने शरणागतों पर लुटाते थे, अपने सेवको पर लुटाते थे, अपने आश्रितो पर लुटाते थे का अनुसरण करें, बस हम श्री राम के काम में हाथ बटायें (क्योंकि उनका काम तो रामराज्य बनाना ही था) क्योंकि सभी जीव भगवान पर आश्रित है, तथा भगवान का काम है अपने आश्रितों, शरणांगतो, भक्तों का ध्यान रखना उन्हें दुःखों से बचाना, हम भगवान के इस सुन्दर काम में उनका हाथ बटायें और उन्हें (भगवान को) अपना आभारी बनायें।
7. अहिंसा का रास्ता अपनाऐं केवल शारीरिक अहिंसा ही नहीं बल्कि मानसिक अहिंसा भी। अगर आपने मानसिक अहिंसा करना सीख लिया तो यह दगा आपको सबका प्यार आपके राज्य (घर) में प्यारपूर्ण वातावरण बन जाएगा। मानसिक अहिंसा मतलब किसी के मन को न कचले बल्कि हो सके जो कोशिश करें वह करने की, जिससे कि आपके राज्य के सदस्यों तथा अन्यों के मन खुश हों सके।
8. ध्यान रखे अगर आप सबों को खुशी दे रहे हैं तो अपने (स्वयं) को भी खुशी ही दें, अरे भाई आप का अपने पर हक औरों के हक से ज्यादा ही होना चाहिए फिर कम क्यों, Balance करें, हो जाता हैं।
9. आप मिशन के कार्य में यथा सम्भव सभी प्रकार के जो भी सम्भव है, सहयोग प्रदान करें मगर ऐसा सहयोग जिससे आप गर्व महसूस करें और आपको खुशी मिले ताकि हमारा मिशन अपने उद्देश्य में कामयाब हो सके। कहते हैं तु भगवान के राक्ते पर चल कर तो देख तेरे लिए सारे रास्ते न खोल दूँ तो कहना, तु मेरे लिए आंसू बहा के ता देख मैं तेरी सारी दुनिया अपनी न बना दूं तो कहना, तू मेरे लुटा के तो देख, मैं तेरे पर खजानों का ढ़ेर न लगा दूं तो कहना, तु मुझे अपना बना के तो देख मै हर एक को तेरा अपना न बना दूं तो कहना